2 मार्च 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

पर में हस्तेक्षप करने की कुत्सित भावना ही मन को अशान्त करती है, आकुल-व्याकुल करती है, दीन-हीन करती है।

ह्न आत्मा ही है शरण, पृष्ठ : 111

वर्ष : 29, अंक : 23 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (प्रथम), 07 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

अलवर (राज.) : यहाँ नव विकसित चेतन एन्क्लेव कॉलोनी में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट, अलवर के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भा.जैन युवा फैडरेशन, अलवर के सहयोग से दिनांक 15 फरवरी से 21फरवरी 2007 तक श्री रत्नत्रय दिगम्बर जिनमन्दिर हेतु श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अनेक मांगलिक कार्यक्रमों पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पर प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित राकेशकुमारजी दिल्ली, पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री भरतपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली आदि विद्वानों के विभिन्न विषयों पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। बालकक्षा का संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सह प्रतिष्ठाचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिंदवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगामा, पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा, पण्डित राहुलजी शास्त्री अलवर, पण्डित सचिनजी शास्त्री गढ़ी, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित बाबूलालजी बांझल गुना ने सम्पन्न कराई।

दिनांक 15 फरवरी को घटयात्रा जुलूस के बाद श्री नरेशचन्दजी जैन (अध्यक्ष, अग्रवाल दिग. जैन समाज) के करकमलों से ध्वजारोहण हुआ।

शौरीपुर के सिंहद्वार का उद्घाटन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री निहालचन्दजी जैन जयपुर, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री एन. के. जैन परिवार अलवर, श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान का उद्घाटन श्री बच्चूसिंहजी जैन अलवर द्वारा किया गया।

नेमिनाथ पंचकल्याणक विधानकर्त्ता श्री जिनेन्द्रकुमारजी सुरेन्द्रकुमारजी जैन परिवार एवं यागमण्डल विधानकर्त्ता श्री नेमीचन्दजी जैन परिवार अलवर थे। रात्रि में महिला जागृति मण्डल, जयपुर द्वारा '**महासती अंजना**' नाटिका का मंचन हुआ।

16 फरवरी को इन्द्र प्रतिष्ठा का जुलूस एवं रात्रि में गर्भ कल्याणक की पूर्व क्रियायें सम्पन्न हुई।

17 फरवरी की रात्रि में गर्भ कल्याणक के प्रसंग पर चेतन एन्क्लेव के बालकों द्वारा '**पुरुरवा भील**' नामक नाटक का मंचन किया गया।

18 फरवरी को जन्म कल्याणक के अवसर पर पांडुक शिला पर बालक नेमिकुमार का जन्माभिषेक, सौधर्म इन्द्र द्वारा ताण्डव नृत्य और रात्रि में पालना-झूलन का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

19 फरवरी को नेमिकुमार की विशाल बारात निकली, उसके बाद उन्हें वैराग्य हुआ। तत्पश्चात् वनगमन एवं दीक्षा विधि सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का दीक्षा विधि पर प्रासंगिक प्रवचन हुआ। रात्रि में जैन सांस्कृतिक नाट्य मण्डल मण्डलेश्वर द्वारा '**नेमि-राजुल वैराग्य**' नाटिका का मंचन हुआ।

20 फरवरी को आहारविधि के पश्चात् नवनिर्मित स्वाध्याय भवन एवं पाठशाला भवन का उद्घाटन हुआ। साथ ही जिनमन्दिर एवं स्वाध्याय भवन में जिनवाणी विराजमान की गई।

केवलज्ञान कल्याणक के अवसर पर समवशरण की सुन्दर रचना की गई; जिसमें दिव्यध्वनि के माध्यम से तीर्थंकर की दिव्य-देशना प्रसारित हुई। रात्रि में आभार प्रदर्शन एवं सम्मान समारोह का कार्यक्रम हुआ।

21 फरवरी को प्रात: गिरनार पर्वत की रचना कर मोक्ष कल्याणक मनाया गया। दोपहर में भव्य जिनेन्द्र शोभायात्रा के पश्चात् नवीन जिनमन्दिर में जिनप्रतिमायें विराजमान की गई। शिखर एवं वेदी पर कलशारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम सकल जैन समाज अलवर के विशेष सहयोग एवं निर्देशन में स्थानीय विद्वान पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित अजितजी शास्त्री के अथक् प्रयासों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के 6 हजार 240 घण्टों के प्रवचनों की सी.डी कैसिट्स एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से प्रकाशित 50 हजार रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। ●

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

सच्चा मित्र वह जो दु:ख में साथ दे

जब धनेश की तबियत अधिक खराब हो जाती थी तो ज्ञानेश स्वयं धनेश के पास आ जाता और उसे समझाता।

ज्ञानेश ने एकबार धनेश को संबोधित करते हुए कहा ह्न **संयोग में प्राप्त वस्तुओं का स्वरूप सर्वज्ञ परमातमा ने जैसा जाना है, देखा है, वैसा ही निरन्तर परिणमता है। अत: संयोगों को इष्ट–अनिष्ट मानकर सुखी–दु:खी होना निष्फल है। ऐसे विचार से ही समता आती है।**

जितनी देर ज्ञानेश धनेश के पास बैठा रहता और उसे चर्चा में रमाये रहता, तब तक तो उसे दर्द का अहसास ही नहीं होता। थोड़ा–बहुत दर्द की ओर ध्यान जाता भी तो तत्काल विषय बदलकर पुन: बातों में लगा लेता।

देखो धनेश ! आत्मा–परमात्मा की चर्चा–वार्ता करना भी धर्मध्यान ही है। ध्यान अकेले आँख बंद कर बैठने से ही नहीं, चलते–फिरते, उठते–बैठते, खाते–पीते भी होता है। अत: तुम निरंतर ऐसा ही कुछ न कुछ सोचा करो तो पीड़ा से भी बचोगे और पीड़ा चिन्तन आर्तध्यान से भी बचोगे।'' इस तरह धनश्री से, ज्ञानेश से तथा अन्य मिलने–जुलने आने वालों से चर्चा–वार्ता करने में धनेश का ध्यान बँटा रहने से दिन तो आराम से कट जाता; पर रात में अकेला पड़ते ही दर्द अधिक महसूस होने लगता।

कुछ बीमारियाँ तो बदनाम ही हैं, जैसे ह्न दमा तो दम लेकर ही जाता है। कैंसर का कोई इलाज नहीं है, टी.बी. भी प्राणलेवा रोगों में एक है। लीवर,किडनी के नामों से भी लोग घबराते रहे हैं।

धनेश उन्हीं रोगियों में एक है, जो अपनी ही भूल से एक साथ ऐसे ही अनेक प्राणलेवा रोगों से घिर चुका है। उसके बचने की अब किसी को कोई आशा नहीं रही है।

पर यह आवश्यक तो नहीं कि प्राणलेवा बीमारियाँ प्राण लेकर ही जायें। यदि आयुकर्म शेष हो और असाता कर्म का अन्त आ जाये तो बड़ी से बड़ी बीमारियाँ भी समाप्त होती देखीं जातीं हैं।

जिन बीमारियों से पिण्ड छुड़ाना धनेश को पश्चिम से सूर्य उदित होने जैसा असंभव लगने लगा था, वे बीमारियाँ भी डॉक्टरों के प्रयास और धनेश व धनश्री के भाग्योदय से धीरे–धीरे ठीक हो गईं।

धनेश जब लम्बी बीमारी के बाद शारीरिक व मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होकर धनश्री के साथ सायंकालीन गोष्ठी में सम्मिलित हुआ तो सभी को प्रसन्नता हुई। ज्ञानेश ने भी हर्ष व्यक्त किया और मुस्कराकर उसको स्वास्थ्य लाभ के लिए बधाई दी और कहा ह्न

''कहो धनेश ! अब तुम्हारी तबियत बिल्कुल ठीक है न ? चेहरे से अब तुम काफी ठीक लग रहे हो। अब तुम्हें स्वांस की भी वैसी तकलीफ नहीं दीखती जैसी पहले थी। अच्छा हुआ तुम स्वस्थ हो गये। तुम्हारी बीमारी की सभी को चिन्ता थी।''

धनेश ने मुस्कराते हुए औपचारिक भाषा में विनम्र भाव से कहा ह्न ''हाँ, आप सबकी शुभकामनाओं से और भली होनहार से बच गया हूँ। बस अब मेरा शेष जीवन आपकी शरण में ही समर्पित रहेगा ह्न ऐसा मेरा दृढ़ संकल्प है। ●

ज्ञानेश तो सचमुच ज्ञानेश ही है

ज्ञानेश की अन्तर्रात्मा से निकले करुण और शांत रस से ओतप्रोत मर्मस्पर्शी उद्गारों ने तो श्रोताओं को प्रभावित किया ही; उसके अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व ने भी आस–पास के वातावरण को सुरभित कर दिया था।

धनश्री, रूपश्री और उनके साथी तो मानो कृतार्थ ही हो गये। इन लोगों को तो ज्योंही अपने पुराने दिन याद आते तो उनके रोंगटे खड़े हो जाते, रूह काँप जाती। इन्हें तो अब ज्ञानेश ही अपने सर्वाधिक शुभचिन्तक लगने लगते थे।

जब कभी फुरसत के समय घंटा आधा घंटा एक साथ बैठते तो बस ज्ञानेश ही उनकी जुबान पर होते।

धनेश कहता ह्न ''सचमुच ज्ञानेशजी जैसा व्यक्ति इस युग में तो दिखाई नहीं देता। एक दिन वह था जब मुझे अपनी पढ़ाई पर गर्व था और ज्ञानेशजी पर मुझे मित्र के नाते दया आती थी। उसकी लौकिक शिक्षा सिम्पल ग्रेजुएट तक ही हो पाने का मुझे अफसोस रहा करता था; परन्तु देखते ही देखते वे कहाँ से कहाँ पहुँच गये और मैं अपने को तीसमारखाँ समझने वाला कहाँ जा गिरा ?

मैं जानता हूँ कि यह सब अचानक नहीं हुआ। ये बीज तो उनमें बचपन से ही थे, पर हरएक को ऐसी परख कहाँ होती है ? मैं भी उन्हीं में से एक हूँ, जो उन्हें पहचान ही नहीं पाया। वे सचमुच तो धूल में ढके हीरा निकला।

एक वह, जिस पर आज हम–तुम ही क्या, सारा समाज गर्व करता है। जो एक बार भी उसके सम्पर्क में आता है, वह उन पर समर्पित हो जाता है। दूसरा मैं हूँ, जो न केवल ज्ञानेशजी की दृष्टि

में; बल्कि समस्त समाज की दृष्टि में दया का पात्र बन गया हूँ।

सचमुच यह धर्म का ही कोई अद्‌भुत प्रभाव है, जिसकी मैंने अबतक कोई कद्र नहीं की। निरन्तर अशुभ भावों में ही जिया। **मति के अनुसार गति होनी थी सो हो गई**। जब–जब मुझे ऐसा पश्चाताप होता है और मैं ज्ञानेशजी से अपने दिल का दर्द कहता हूँ तो वे कहते हैं ह्न **भाई! अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। तुम ही क्या ? अभी तो हम–तुम सभी एक ही श्रेणी में हैं, स्वभाव से तो सभी भगवान हैं; पर भूले हुए भगवान हैं। सत्य बात समझ में आने का भी अपना स्वकाल होता है। देखो, समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कभी कुछ भी नहीं मिलता। अत: भूत को भूलो, भविष्य की चिन्ता छोड़ो और वर्तमान में आध्यात्मिक अध्ययन, मनन, चिंतन करो; भविष्य स्वत: सम्हल जायेगा।**''

सेठ लक्ष्मीलाल ने कहा ह्न ''हाँ भाई धनेश ! तुम ठीक कह रहे हो। ज्ञानेशजी तो सचमुच ज्ञानेश ही हैं। यदि और कोई होता हो हमें आश्वस्त करने के बजाय, अपनाने के बजाय, बचपन में हुए हमारे दुर्व्यवहार की याद दिला–दिला कर हमें नीचा दिखाता और अपमानित करता। पर ज्ञानेशजी.....! वह तो सचमुच देवता है, देवता।

मुझे ही देखो न ! मैंने अपनी सेठाई के अभिमान में जिनकी थोड़ी भी उपेक्षा की, वे आज बड़े क्या बन गए; मुझसे एक–एक बात का बदला लेने पर तुले रहते हैं। ऐसी है जगत की प्रवृत्ति। वह तो ज्ञानेशजी ही ऐसे हैं, जिसने भूत को भुलाकर अपन लोगों पर असीम उपकार किया है। ज्ञानेशजी के कारण ही मुझे धर्म का कुछ–कुछ ज्ञान हुआ है, अन्यथा हम तो सुबह से शाम तक अपने नकली प्रशंसकों और चापलूसों से घिरे रहकर दानवीर, कर्मवीर, धर्मवीर आदि विशेषणों से युक्त प्रशंसा की मदिरा पीकर पागल हो रहे थे और न्याय–अन्याय से अर्जित धन को उनके कहे अनुसार पानी की तरह बहा कर उससे प्रसन्न हो कर परिग्रहानन्दी खोटा रौद्रध्यान कर रहे थे।

हमें अपने शुभ–अशुभ भावों की कुछ भी पहचान नहीं थी। हमने कभी सोचा ही नहीं कि ह्न **इन भावों का फल क्या होगा ?** सचमुच यदि ज्ञानेश के रूप में वह धर्मावतार न मिला होता तो हमने तो नरक जाने की ही तैयारी कर ली थी। धन्य है इस सत्पुरुष को। यह दीर्घायु हो और हम सबके कल्याण में निमित्त बना रहे ह्न मेरी तो यही मंगल भावना है।''

मोहन यह सब सुन–सुनकर गद्‌गद् हो गया। आँसू पोंछते हुए बोला ह्न ''यदि हम लोगों को ज्ञानेश का सत्समागम न मिला होता, उनसे प्रेरणा और आश्वासन न मिला होता, उनकी अमृतमय वाणी सुनने को नहीं मिली होती तो हम तो दुर्व्यसनों की दल–दल में से निकल ही नहीं पाते। ज्ञानेशजी के प्रवचनों के अलावा उनके पवित्र जीवन से भी प्रेरणा मिली है। आज मैं जो कुछ भी समझ सका हूँ, ज्ञानेशजी की देन है।''

रूपश्री और धनश्री तो फूट–फूट कर रो ही पड़ी। नारियाँ भावुक तो स्वभावत: होती ही हैं। फिर ज्ञानेश के सत्समागम से इन्हें जो वचनातीत लाभ हुआ था, उससे वे गद्‌गद् हो रही थीं। वे कुछ न कह सकीं, पर कुछ न कह कर भी उन्होंने उद्धव की गोपियों की भाँति आँसुओं और हिचकियों से सब कुछ कह दिया ह्न

नेकु कही बैननि, अनेक कही नैननि।
रही–सही सोऊ कह दीनी हिचकीनि सौं।।

सेठ लक्ष्मीलाल से चुप नहीं रहा गया। वह पुन: बोला ह्न ''देखो, पुण्योदय से मुझे किसी खास आधि–व्याधि ने नहीं सताया, कोई मानसिक चिन्तायें नहीं रही, शारीरिक रोग नहीं हुए तो मैं यश एवं प्रतिष्ठा के प्रलोभन में आकर समाजसेवा की उपाधियों में ही उलझ गया। समाजसेवा का काम भी पवित्र भाव से नहीं कर पाया। उनमें भी यश, प्रतिष्ठा का लोभ तो रहा ही, साथ में व्यक्तिगत स्वार्थ भी कम नहीं रहा। यदि ज्ञानेश जैसे सत्पुरुष को समागम न मिला होता तो मैं उन अशुभ भावों की कीचड़ से निकल ही नहीं पाता।

एक प्रवचन में ज्ञानेश ने कहा था कि ह्न **जो व्यक्ति राष्ट्रसेवा एवं समाज सेवा के नाम पर ट्रस्ट बनाकर अपने काले धन को सफेद करते हैं और उस धन से 'एक पंथ अनेक काज' साधते हैं ह्न उनकी यहाँ बात ही नहीं है; उनके वे भाव तो स्पष्टरूप से अशुभ भाव ही हैं। सचमुच देखा जाये तो वे अपनी रोटियाँ सेकने में ही लगे हैं। वे स्वयं समझते होंगे कि वे कितने धर्मात्मा है; पर जो व्यक्ति अपने धन का सदुपयोग सचमुच लोक कल्याण की भावना से जनहित में ही करते हैं, उसके पीछे जिनका यश–प्रतिष्ठा कराने का कतई/कोई अभिप्राय नहीं होता, उन्हें भी एक बार आत्मनिरीक्षण तो करना ही चाहिए, अपने भावों की पहचान तो करना ही चाहिए कि उनके इन कार्यों में कितनी धर्मप्रभावना है, कितनी शुभभावना है और कितना अशुभभाव वर्तता है ? आँख मींचकर अपने को धर्मात्मा, दानवीर आदि माने बैठे रहना कोई बुद्धिमानी नहीं है।** (क्रमश:)

आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें लगभग 169 छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 458 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 52 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राज. संस्कृत वि.वि.की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राज.) का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी है, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवी) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र 15 जून 2007 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है, अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना–पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **देवलाली–नासिक (महाराष्ट्र) में 08 मई से 25 मई, 2007 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक (18 दिन) रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

देवलाली का पता –
पूज्यश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट,
कहाननगर, लामरोड, बेलतगांव रास्ता
देवलाली–नासिक–422401 (महा.)
फोन (0253)2492278, 2492274

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्राचार्य
श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय,
ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.)
फोन : 0141–2705581, 2707458

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1.श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 30 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।

2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।

3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।

4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ–साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।

5.जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ–साथ अपने परिवार–समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।

6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।

7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त करते हैं।

9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।

10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।

11. छात्रों की वक्तृत्व शैली, तर्क शैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व–पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 8 मई से 25 मई 2007 तक देवलाली (नासिक) महाराष्ट्र** में आयोजित शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **ह्न पीयूष शास्त्री एवं धर्मेन्द्र शास्त्री**

नोट ह्न महाविद्यालय का प्रवेश फार्म आगामी (मार्च–द्वितीय) अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

स्वर्णपदक से सम्मानित : धर्मेन्द्र जैन

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, जयपुर को **जैनदर्शनाचार्य** विषय की मैरिट लिस्ट में **प्रथम स्थान** प्राप्त करने पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.) एवं भगवानदास शोभालाल वाराणसी की ओर से प्रदत्त दो स्वर्णपदकों एवं प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया गया।

ज्ञातव्य है कि विगत 7 वर्षों से आप श्री टोडरमल महाविद्यालय के अधीक्षक पद पर कार्यरत रहते हुये अपनी सेवायें दे रहे हैं।

आपकी इस उपलब्धि के लिये जैनपथप्रदर्शक समिति एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

डॉ. राजेन्द्र बंसल को बरैया पुरस्कार

अशोकनगर (म.प्र.) : सुप्रसिद्ध लेखक एवं समन्वयवाणी के वरिष्ठ मुख्य उप–सम्पादक डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल, अमलाई को अ. भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा प्रवर्तित **श्री गोपालदास बरैया पुरस्कार** विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा दिनांक 23 जनवरी07 को समारोहपूर्वक प्रदान किया गया।

इस अवसर पर विद्वत्परिषद् के महामंत्री डॉ. सत्यप्रकाश जैन ने डॉ. राजेन्द्रजी द्वारा की गई साहित्य सेवा का उल्लेख करते हुये उनका परिचय दिया। पुरस्कारस्वरूप आपको 5 हजार रुपये की नगद राशि, शॉल, श्रीफल, प्रशस्तिपत्र व प्रतीक–चिह्न भेंट किया गया। सभा का संचालन विद्वत्परिषद् के प्रचार–प्रकाशन मंत्री श्री अखिलजी बंसल ने किया।

'भ. महावीर जन्मभूमि का सच' लोकार्पित

नई दिल्ली : अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के मंत्री डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल की नवीनतम कृति **भगवान महावीर जन्मभूमि का सच** का लोकार्पण दिनांक 4 फरवरी 07 को श्री कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली में आचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज एवं उपाध्याय गुप्तिसागरजी के पावन सान्निध्य में **महामहिम उपराष्ट्रपति भैरोसिंहजी शेखावत** द्वारा किया गया। कृति का संपादन श्री अखिलजी बंसल ने किया।

शुभकामनाएँ

1. कोलकाता निवासी श्री प्रदीप कुमार जैन की सुपुत्री सौ.का. पूजा जैन का ग्वालियर निवासी चि. आलोक के साथ दि. 23 जनवरी, 07 को विवाह संपन्न होने पर जैन पथप्रदर्शक को 501/– रुपये की राशि प्राप्त हुई।

2. श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर के भाई चि. अनुराग जैन एवं सौ. मानसी के परिणय प्रसंग पर जैन पथप्रदर्शक समिति को 101/– रुपये की राशि प्राप्त हुई।

3. गढ़ा–जबलपुर निवासी श्रीमती शिखा जैन धर्मपत्नी श्री जितेन्द्र जैन की सुपुत्री के जन्मोपलक्ष्य(25 फरवरी 07) पर पण्डित सुदीप शास्त्री, बरगी द्वारा जैन पथप्रदर्शक समिति को 201/– रुपये की राशि प्राप्त हुई।

आप सभी दातारों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुये जैन पथप्रदर्शक समिति की ओर से शुभकामनाएँ !

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

1. **दिल्ली (आत्मसाधना केन्द्र) :** यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में पंचकल्याणक की द्वितीय वर्षगाँठ के अवसर पर दिनांक 11 फरवरी 07 को विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुये। इस अवसर पर पण्डित मनीषजी शास्त्री, रहली के प्रवचनों का लाभ उपस्थित श्रोताओं को प्राप्त हुआ।

2. **विदिशा (म.प्र.) :** यहाँ श्री शीतलनाथ दिग. जैन बड़ा मन्दिर का पंचम वार्षिकोत्सव दिनांक 15 से 18 फरवरी, 07 तक श्री शिखरचन्दजी संजयकुमारजी जैन (अलंकार ज्वैलर्स) एवं जितेन्द्रकुमारजी सत्येन्द्रकुमारजी जैन लश्करी परिवार द्वारा श्री शीतलनाथ मण्डल विधान, आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर एवं महामस्तकाभिषेक का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल, पण्डित कस्तुरचन्दजी, पण्डित शिखरचन्दजी, पण्डित नंदकिशोरजी गोयल, पण्डित लालजीरामजी, डॉ. विनोदजी, डॉ. मुकेशजी आदि का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। **ह्न नरेन्द्र जैन**

वैराग्य समाचार

1. उदयपुर निवासी **पण्डित देवीलालजी मेहता** का दिनांक 12 फरवरी, 07 को 88 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यन्त सरल एवं सादगीपूर्ण व्यक्तित्व के धनी थे।

श्वेताम्बर आम्नाय में जन्म लेकर भी गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा प्रदत्त तत्त्वज्ञान से प्रभावित होकर आपने दिगम्बर धर्म स्वीकार किया। गुरुदेवश्री का सान्निध्य प्राप्त करने हेतु आप अनेकों बार सोनगढ़ शिविर में जाते थे। दशलक्षण आदि पर्वों में भी आप प्रवचनार्थ जाते रहे हैं।

2. किरतपुर (बिजनौर–उ.प्र.) निवासी **पण्डित श्रेयांसकुमारजी शास्त्री** का दिनांक 14 जनवरी, 07 को देहावसान हो गया है। आप शांतपरिणामी एवं स्वाध्यायप्रिय व्यक्ति थे। प्रतिवर्ष दशलक्षण पर्व में स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रवचनार्थ जाते थे। आपकी स्मृति में 101 रुपये प्राप्त हुये।

3. दिल्ली–शिवाजी पार्क निवासी **स्व. श्री सुभाषचन्दजी जैन** (मेडिकल वालों) की पुण्यस्मृति में 501 रुपये की राशि प्राप्त हुई।

दिवगंत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो, यही भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

15 अप्रैल 07	**मुम्बई**	**मुख्य अतिथि (जैन युवा संघ के रजत जयंती समारोह में)**
05 से 7 मई 07	**देवलाली**	**मुमुक्षु सम्मलेन**
08 से 25 मई 07	**देवलाली**	**प्रशिक्षण शिविर**
31 मई से 6 जून	**लन्दन**	**प्रवचनार्थ**
7 जून से 22 जुलाई	**अमेरिका**	**प्रवचनार्थ**
3 से 10 अगस्त 07	**जयपुर**	**शिक्षण शिविर**
8 से 15 सितम्बर 07	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
16 से 26 सितम्बर 07	**मुम्बई**	**दिगम्बर पर्यूषण**

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 02

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

एक राजा था, उस राजा की यह आदत थी कि जो भी फरियादी उसके पास आता और राजा से कहता कि उसने मुझे पीट दिया।

तब राजा उससे पूछता था कि फिर क्या हुआ ?

फिर क्या हुआ, फिर क्या हुआ ? ह्न ऐसे पूछता ही रहता था।

आखिर वह फरियादी अन्त में कहता ह्न इसके बाद कुछ नहीं हुआ; तब राजा कहता कुछ नहीं हुआ तो जाओ।

आखिरकार अन्त में तो कहना ही पड़ेगा न कि कुछ नहीं हुआ।

एक आदमी उस राजा के पास गया और उसने कहा कि मैंने खेती की और गेहूँ बोये। राजा ने पूछा ह्न फिर क्या हुआ ?

उसने कहा ह्न अच्छी बरसात हुई, इतने अधिक गेहूँ पैदा हुए कि मैं उन्हें समेट नहीं सका। फिर क्या हुआ ? मैंने एक वेयर हाऊस किराये से लेकर, गेहूँ बोरों में भरकर, सब गेहूँ उसमें रख दिये।

राजा ने कहा ह्न फिर क्या हुआ ?

एक चिड़िया आती, गेहूँ का एक दाना लेकर फुर्र करके उड़ जाती। चिड़िया आई, एक दाना लिया और फुर्र करके उड़ गई।

फिर क्या हुआ? चिड़िया आई.....।

राजा ने पूछा तेरी यह फुर-फुरबाजी समाप्त होगी या नहीं ?

उसने कहा ह्न साहब ! गेहूँ तो बहुत पैदा हुआ था न, चिड़िया तो एक-एक दाना ही लेकर जाती है। जब गेहूँ पूरी तरह खाली हो, तब ही तो कहानी समाप्त होगी न?

आखिर में उसने कहा कि हजूर जब आपकी यह फिर-फिर बाजी समाप्त होगी, तब मेरी यह फुर-फुरबाजी समाप्त होगी।

इसीप्रकार कहानी सिद्धों में समाप्त थोड़े ही हुई? वे तो अनन्त काल तक वहीं पर रहेंगे। यह ऐसी कहानी है कि जो कभी समाप्त नहीं होती।

क्या आप जानते हैं कि सिद्धांत किसे कहते हैं और सिद्धांतशास्त्र किसे कहते हैं ?

जिस बात का अन्त सिद्धदशा में जाकर हो, उसका नाम है सिद्धान्त। उक्त नियमानुसार छहढाला असली सिद्धान्तशास्त्र है; क्योंकि इसका अन्त सिद्ध-अवस्था में जाकर होता है।

देखो ! अपने जितने भी पुराण हैं, उन सभी में सैकड़ों भवों की कहानियाँ हैं; वे सभी कहानियाँ सिद्धदशा में ही समाप्त होती हैं।

सिनेमा में जाते हो तो कहानी का अन्त कहाँ होता है ?

अरे ! हिन्दुस्तान के सिनेमा की एक ही स्टाईल है। दो लड़कियाँ और एक लड़का अथवा एक लड़की और दो लड़के। उनमें से एक खत्म हो गया, दो की आपस में शादी हो गई। हाथ में हाथ मिलाया और बस कहानी खत्म।

भारतीय नाट्यशास्त्र का यह नियम है कि प्रत्येक कहानी सुखान्त होनी चाहिए, दुखान्त नहीं होनी चाहिए। ये दुखान्त कहानियाँ विदेश से आई हैं। शेक्सपियर ने सबसे पहले दुखान्त नाटक लिखे, उनकी नकल पर हिन्दुस्थान में लिखे जाने लगे।

दो हजार वर्ष पूर्व भरत मुनि हुये हैं। उन्होंने महाकाव्य और नाटक के नियम लिखे हैं। उनमें साफ-साफ लिखा है कि प्रत्येक कहानी का अन्त सुखमय होना चाहिए। जैनधर्म में कहानी को तबतक समाप्त नहीं करते, जबतक जीव मोक्ष न चला जाये। चाहे आदिनाथ हों, चाहे पार्श्वनाथ या महावीर हों; उनके पच्चीसों भव सुनाये जायेंगे और अन्त में उन्हें मोक्ष में पहुँचा देंगे; तभी पुराण समाप्त होगा। इसलिए वह भी सिद्धान्तशास्त्र है।

मैं आपसे कहता हूँ कि भारतीय नियम के अनुसार यदि हर कहानी को सुखान्त होना चाहिए, तो जो कहानियाँ शादी पर समाप्त हुईं; वे सुखान्त कहाँ हुई, वे तो भोगान्त हैं। लड़का-लड़की की शादी हुई और सुखी हो गये ? अरे भाई ! अब तो दु:ख की शुरूआत हुई है।

छहढाला की पहली ढाल में यही तो बताया है कि चारों गतियों में सुख है ही नहीं, दु:ख ही दु:ख है। इसमें चारों गतियों के दु:खों का वर्णन है। नरक गया तो दुखान्त और स्वर्ग चला गया तो सुखान्त ह्न यह बात कहाँ से लाये ? हम भगवान आदिनाथ की पूजा करते हैं, बहुत पुरानी पूजन है, उसकी जयमाला में आता है ह्न

आदिश्वर महाराज हो, म्हारी दीनतणी सुन वीनती।
चारों गति के मांहि मैं दु:ख पाये सो सुनो।।
ऊँट बलद भैंसा भयो, जापैं लदियो भार अपार हो।
नहिं चाल्यौ जठै गिर पर्‌यो, पापी दे सोटन की मार हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।

क्या कह रहे हैं ह्न ऊँट हुआ, बैल हुआ और भैंसा हुआ।

इन तीनों को गाड़ी में जोता जाता है। बैलों को बैलगाड़ी में, ऊँटों को ऊँटगाड़ी में और भैंसों को भैंसागाड़ी में। उनपर उनकी शक्ति से ज्यादा भार लाद दिया जाता है। जब वे चल नहीं पाते हैं और गिर पड़ते हैं, तब पापी लोग उन्हें डंडों से मारते हैं। उन्हें दंडा मार-मार कर उठाया जाता है। शक्ति नहीं है, गिर पड़ा है; फिर भी कुछ दया नहीं।

पूजन चल रही है, पूजा में सारे वाद्ययंत्र बज रहे हैं, नाचनेवाले नाच रहे हैं; तब अचानक बीच में ही एक व्यक्ति बोल उठता है ह्न आज के आनन्द की जय। अरे, भाई ! यदि आनंद आ रहा है तो रो क्यों रहे हो ? आँखों में से आँसुओं की धारा क्यों बह रही है ? सोटन की मार पड़ रही है तो आनन्द कहाँ से आ रहा है?

उसे पता ही नहीं कि मुँह से क्या निकल रहा है, वह तो झाँझ–मंजीरा में ही मग्न हो गया है। अरे ! उसमें लिखा है कि चारों गतियों में दु:ख ही दु:ख हैं, सुख नहीं है। छहढाला में भी यही लिखा है। इसकी पहली ढाल में तो चारों गतियों के दु:खों का वर्णन है।

तिर्यंचगति के पशु–पक्षियों के दु:ख तो हमें दिखते ही हैं। मारा जाना, काटा जाना, छेदन–भेदन, भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी आदि न जाने कितनी प्रतिकूलतायें हैं।

तिर्यंचगति के दु:खों का वर्णन करते हुये लिखा है ह्न

काल अनन्त निगोद मँझार, बीत्यो एकेन्द्रीय तन धार।
निकसि भूमि जल पावक भयो, पवन प्रतेक वनस्पति थयो ।।

एकेन्द्रिय अवस्था में तो निगोद में रहा और फिर वहाँ से निकलकर भूमि, जल, अग्नि, वायु और प्रत्येकवनस्पति हुआ।

साधारण वनस्पति और प्रत्येक वनस्पति के भेद से वनस्पति दो प्रकार की होती है। निगोदिया जीव साधारण वनस्पति में होते हैं, प्रत्येक वनस्पति में नहीं होते। यह जीव निगोदरूप साधारण वनस्पति में से निकलकर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और प्रत्येक वनस्पति हुआ।

जिसप्रकार किसी को चिन्तामणि रत्न मिल गया हो; उसीप्रकार इसे त्रसपर्याय प्राप्त हुई। द्वीन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के सभी जीव त्रस कहलाते हैं।

चिन्तामणि रत्न देखा तो आजतक किसी ने भी नहीं है। मात्र शास्त्रों में देखा है, पर शास्त्रों में देखना भी तो देखना है। कहते हैं कि चिन्तामणि रत्न जिसके पास होता है, वह व्यक्ति जो सोचता है, वह उसे मिल जाता है।

चिन्तामणि रत्न के मिल जाने से भी क्या होता है। अरे भाई! जबतक संयोगों में सुखबुद्धि है, जबतक भोगों की इच्छा है; तबतक सुखी होना सम्भव नहीं है; क्योंकि बात मात्र इतनी ही नहीं है कि हमें आवश्यकतानुसार भोग सामग्री चाहिये, बात तो यह है कि लौकिक वैभव मात्र हमारे ही पास हो, पड़ौसी के पास नहीं। हम इतने ईर्षालु हो गये हैं कि हमें दूसरों का वैभव सुहाता ही नहीं है। इस बात को निम्नांकित उदाहरण से भलीभाँति समझा जा सकता है ह्न

एक बार एक व्यक्ति ने बहुत तपस्या की तो शंकरजी ने प्रसन्न होकर कहा ह्न जो चाहो माँग लो। उसने माँगा कि मैं जो चाहूँ, वह हो जाये। शंकरजी ने कहा ह्न तुम जो चाहोगे, वह हो जायेगा; लेकिन इतनी सी बात है कि जितना तुम्हें मिलेगा, उससे दुगना तेरे पड़ौसी को मिलेगा।

तात्पर्य यह है कि यदि वह हजार रुपये मांगे तो पड़ौसी को दो हजार मिल जावेंगे, लाख मांगे तो पड़ौसी को दो लाख मिल जावेंगे।

तब उसने सम्पत्ति तो नहीं माँगी, पर विपत्ति माँगी। कहा ह्न मेरी एक आँख फूट जाय तो पड़ौसी की दोनों ही फूट गईं।

दूसरों की दोनों आँखें फोड़ने के लिए यह जीव अपनी भी एक आँख फोड़ने के लिए तैयार हो जाता है।

बोलो ऐसे जीव सुखी कैसे हो सकते हैं ?

इसप्रकार तिर्यंचगति में मारा जाना, काटा जाना, भारवहन कराना, भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी आदि के असीम दु:ख भोगे।

नरकगति में भी सर्दी–गर्मी इतनी कि मेरु के समान लोहे का गोला भी छार–छार हो जाय, पिघल जाय। भूख–प्यास इतनी कि तीन लोक का अनाज खा जावे, समुद्रों का पानी पी जावे; तब भी न मिटे, पर एक कण अनाज और एक बूँद पानी न मिले।

कहा भी है ह्न

मेरु–समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय।
सिन्धु नीरतैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय।
तीन लोक को नाज जु खाय,मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुख बहु सागर लौं सहै, करम–जोग तैं नरगति लहै।।

देखो यहाँ कहा है कि तीन लोक में जितना अनाज पैदा होता है, वह सारा अनाज खा जाये तो भी नारकी की भूख नहीं मिटती है; फिर भी खाने के लिए उसे एक दाना नहीं मिलता।

तीन लोक में अनाज कहाँ–कहाँ पैदा होता है ? देवलोक में कौनसा अनाज पैदा होता है, नरकों में कौनसा अनाज पैदा होता है? मध्यलोक में इतने समुद्र हैं, उनमें कौनसा अनाज पैदा होता है? जमीन पर भी जहाँ लोग रहते हैं, वहाँ अनाज कहाँ पैदा होता है ? बहुत कम एरिया है, जहाँ अनाज पैदा होता है। फिर तीन लोक का अनाज क्यों बोलते हैं ?

अरे भाई ! तुम्हें कल्पना कराकर उनके दु:ख का अंदाज करा रहे हैं। अनाज कहाँ–कहाँ पैदा होता है ह्न इसका वर्णन नहीं कर रहे हैं। वे तो उस जीव की भूख व उसकी आकुलता का वर्णन कर रहे हैं। **(क्रमश:)**

2 मार्च 2007, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

देवलाली में मुमुक्षु सम्मेलन

प्रशिक्षण-शिविर के ठीक पहले 5 से 7 मई 2007 तक मुमुक्षु विद्वानों और मुमुक्षु मंडल के प्रतिनिधियों का एक स्नेह सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। उक्त संदर्भ में हमारे पास देवलाली ट्रस्ट की ओर से गुजराती में एक परिपत्र जैनपथप्रदर्शक और वीतराग-विज्ञान में प्रकाशनार्थ आया है; जिसका भावानुवाद इसप्रकार है ह्न

इस सन्दर्भ में हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि यह सम्मेलन पूर्णत: स्नेह सम्मेलन ही है। इसमें न तो कोई नई संगठनात्मक संस्था बनाना है और न किसी खास तात्त्विक, सामाजिक और व्यक्तिगत व्यवहार की चर्चा करनी है। उद्देश्य मात्र इतना ही है कि पू. गुरुदेवश्री के देहावसान के बाद अपने समाज में जो तत्त्वसंबंधी उदासीनता दिखाई देती है; उसके बारे में गंभीर विचार-विमर्श करना है। अपने बालकों व युवकों में संस्कार डालने के लिए कुछ ऐसा करना है कि जिससे बालकों व युवकों में तत्त्व के प्रति रुचि जागृत हो; क्योंकि महान भाग्य से इसकाल में हमें जो उत्तम तत्त्व प्राप्त हुआ है, वह यदि भावी पीढ़ी में नहीं पहुँचेगा तो ..।

1976 में पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने यह चेतावनी दी थी कि गुजराती भाई-बहिनों में धर्म के प्रति जो रस दिखाई देता है, वह मात्र गुरुदेवश्री के प्रभाव के कारण ही है, व्यक्तिविशेष के प्रति अहोभाव के कारण ही है। यदि तत्त्व के कारण बहुमान नहीं आयेगा तो व्यक्ति की गैरहाजिरी होते ही लोप हो जायेगा ह्न ऐसा भय है। हुआ भी लगभग ऐसा ही है, इसलिए इस सन्दर्भ में गंभीर विचार करने का समय आ गया है।

सामान्य मतभेदों को भूलकर समाज तत्त्वरसिक किसप्रकार हो, बालक और युवकों में तत्त्वरुचि कैसे उत्पन्न हो ह्न इन बातों पर विचार करना है; किसी प्रकार की वाद-विवादवाली बात की चर्चा नहीं करना है। ध्यान रहे, वातावरण में कलुषता उत्पन्न हो ह्न ऐसी कोई चर्चा किसी को नहीं करनी दी जावेगी।

सम्पूर्ण भारतवर्ष के सभी प्रमुख मुमुक्षुओं को आमंत्रण है। हम आशा रखते हैं कि आप सब हमारे अतिथि बनेंगे। पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में हम सब जिस वात्सल्यभाव से मिलते थे; उसीप्रकार के वात्सल्यभाव का अनुभव आपको इस सम्मेलन में होगा। आने की पूर्व सूचना अवश्य देवे।

हम जब श्री पाटनीजी और डॉ. भारिल्लजी के साथ सन् 2000 में ससंघ सौराष्ट्र के जिनमंदिरों के दर्शन करने गये थे; जब जो वात्सल्यभाव सोनगढ़ ट्रस्ट ने बताया था, वैसा ही अभी भी प्राप्त होगा। इस आशा के साथ

ह्न समस्त ट्रस्टीगण

पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली (महा.)

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण

फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम: जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)

प्रकाशन स्थान : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)

प्रकाशन अवधि : पाक्षिक

मुद्रक : श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)

प्रकाशक का नाम : ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

सम्पादक का नाम : श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

स्वामित्व : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 1-3-2007

प्रकाशक :

ब्र. यशपाल जैन

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

शिक्षण शिविर संपन्न

कुराबड़ (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग विज्ञान समिति उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 12 फरवरी, 07 तक श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कुरावड़ द्वारा शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगामा के नियमसार पर प्रवचन हुये। दोपहर एवं सायंकाल में प्रौढ़ तथा बालकक्षा संचालित की गई।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

फोन : (0141) 2705581, 2707458

फैक्स : (0141) 2704127